بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 07

राह-ए-ईमान

जुलाई
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 24.5.2024).....8
7. ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु व जीवन की आस्था का महत्त्व.....12
8. जमाअत अहमदिया में सम्मिलित होने के लिए क्या शर्तें हैं?.....21
9. सामान्य ज्ञान.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

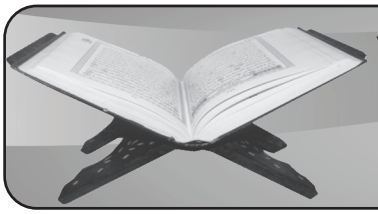

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:- और हम ने तुझ पर यह किताब (क़ुर्आन) सच्चाई पर आधारित उतारी है। वह अपने से पहली किताब (की बातों) को पूरा करने वाली है तथा उस की रक्षा करने वाली है। अत: तू इस (किताब) के अनुसार उन में निर्णय कर जो अल्लाह ने (तुझ पर) उतारी है और जो सच तेरी ओर आया है उसे छोड़ कर उन की मनोकामनाओं का अनुसरण न कर। हम ने तुम में से हर-एक के लिए (अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार इल्हामी) पानी तक पहुँचने का एक छोटा अथवा बड़ा रास्ता बनाया है और यदि अल्लाह चाहता तो तुम (सब) को एक ही सम्प्रदाय बना देता, परन्तु (इस कलाम के बारे में) जो उस ने तुम पर उतारा है तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए (ऐसा नहीं किया)। अत: तुम एक-दूसरे से नेकियों में बढ़ने के लिए मुक़ाबिला करो, क्योंकि तुम सब को अल्लाह की ओर ही लौट कर जाना है। अत: वह तुम्हें उन सब बातों से जानकारी कराएगा, जिन में तुम मतभेद किया करते थे। (अल माईदा : 49)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: सवार पैदल चलने वाले को और पैदल चलने वाला बैठने वाले को सलाम करे और थोड़े लोग अधिक लोगों को सलाम करें। (अर्थात सलाम करने में पहल करें) (बुख़ारी किताब इस्तैयज़ान)

अनुवाद - हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया- जब तुम में से कोई अपने भाई से मिले तो उसे सलाम कहे। फिर जब कोई पेड़ या दीवार या पत्थर बीच में आ जाए अर्थात वे एक दूसरे की नज़रों से ओझल हो जाएं और फिर आपस में मिलें तो फिर एक दूसरे को सलाम कहें। (अबु दाऊद किताबुल अदब)

अनुवाद- हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि जब यमन वाले आए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुश होकर फरमाया- तुम्हारे पास यमन वाले लोग आए हैं ये वे लोग हैं जिन्होंने सबसे पहले हाथ मिलाने (की परम्परा) को रिवाज़ दिया। (अबु दाऊद किताबुल अदब)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली

जुमा की नमाज़ के बाद खुली सभा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निम्नलिखित तक़रीर की:-

"देखो मैं मात्र ख़ुदा के लिए संक्षिप्त रूप से कुछ बातें सुनाता हूं। मेरी तबियत अच्छी नहीं और अधिक बातों की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वे लोग जिनको अल्लाह तआला ने नेक और स्वच्छ प्रकृति (फितरत) प्रदान की है और जिनकी प्रतिभाएं उत्तम हैं वे बहुत ज़्यादा बातों के मोहताज नहीं होते और एक इशारे ही से असल अर्थ और उद्देश्य को समझ लेते हैं और बात ही हक़ीक़त को पा लेते हैं। हां जो लोग अच्छी प्रकृति और उत्तम प्रतिभा नहीं रखते और अल्लाह तआला के वजूद और उसकी ताक़त पर भरोसा नहीं रखते वे तो अपनी ही स्वार्थपरायणताओं के पीछे चलते हैं। वे ऐसे कुएं में पड़े हुए मेंडक हैं कि अगर सारे नबी इकट्ठा होकर नसीहत के एक ही मंच पर खड़े होकर नसीहत करें तब भी उन्हें कुछ फ़ायदा न होगा।

यही वह रहस्य है कि हर नबी और रसूल के समय में दो वर्ग होते हैं 1-एक वह जिसका नाम सईद (सुभागी अर्थात सौभाग्यशाली) रखा है और 2- दूसरा वह जो शक़ी (अभागी) कहलाता है। दोनों वर्ग उपदेशों की दृष्टि से नबियों के सामने बराबर थे और उस पवित्र गिरोह ने कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं किया। पूरे तौर पर नसीहत का हक़ अदा किया, जैसे सुभागियों के लिए वैसे ही अभागियों के लिए। परंतु सुभागी क़ौम कान रखती थी जिससे उसने सुना, आंखें रखती थी जिससे उसने देखा, दिल रखती थी जिससे उसने समझा लेकिन अभागियों का गिरोह एक ऐसी क़ौम थी जिसके कान न थे, जो सुनती और न आंखें थी, जिससे देखती, न दिल थे, जिससे समझती इसीलिए वह वंचित रही।

मक्का की मिट्टी एक ही थी जिससे अबू बक्र रज़िअल्लाहो अन्हों और अबू जहल पैदा हुए। मक्का वही मक्का है जहां अब करोड़ोंइन्सान हर वर्ग और हर दर्जे के दुनिया के हर कोने से जमा होते हैं। उसी मक्का में यह दोनोइन्सान पैदा हुए। जिनमें से पूर्वोक्त अपनी शिष्टता सज्जनता और सीधे-सादे होने के कारण हिदायत पाकर सिद्दीक़ों के चरमोत्कर्ष तक पहुंच गया। और दूसरा दुष्टता, मूर्खता अनावश्यक वैमनस्यता और सच्चाई की मुख़ालिफ़त में मशहूर है।

याद रखो कमाल दो ही प्रकार के होते हैं। 1-एक रहमानी 2-दूसरी शैतानी। रहमानी कमाल के आदमी आसमान पर एक प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि पाते हैं। इसी तरह शैतानी कमाल के आदमी शैतानों की नस्ल में प्रसिद्धि पाते हैं। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

किन्तु ख़ुदा की इच्छा यही थी कि वह तुझे बदनाम करे और लोगों को तेरा अपमान दिखाए। इसलिए तू मुकाबला करने के लिए सामने आया और जो करना था वह तूने किया तथा छल-कपट से काम लिया और मूर्ख लोगों को प्रसन्न करने के लिए अपनी पुस्तक में इनाम का विज्ञापन दे दिया। परन्तु तूने उसे गाँठ बन्द ही रहने दिया और उसे न खोला तथा अपने हर वार्तालाप में धोखा दिया और यह तो हमें मालूम ही है कि तू धनवान नहीं है।

इसके अतिरिक्त हम यह भी नहीं जानते कि तू वादे का सच्चा और संयमी है बल्कि हम तेरी बातों में पापियों जैसी बेईमानी (खियानत) पाते हैं। फिर इस बात का क्या विश्वास कि जब तू पराजित हो जाए और तुझ पर कंपन छा जाए तो तू अपना वादा अवश्य पूरा करेगा। और हाल यह है कि वादा भंग करना इस नस्ल की विशेषताओं में स्पष्ट विशेषता है। यदि तू स्वंय ही वादा भंग करने के तालाब में उतर जाए तो फिर हे कृपण (तंग दिल) बता हम यह रक़म कहां से लेंगे? हम नहीं चाहते कि यह मामला जजों तक जाए और हम शासकों की सहायता के मोहताज हों तथा हम खतरों का लक्ष्य बनें। हमें मालूम है कि तू दरिद्र है तेरे पास चांदी-सोना नहीं है फिर बता। तेरी दरिद्रता, तेरी मोहताजी, और धन की कमी के होते हुए यह नक़द माल कहां से निकलेगा। इसके अतिरिक्त नवीन रायें इरादों (संकल्पों) के आड़े आ जाती हैं और वादों के मार्ग में बाधक होती हैं। हमारे तथा वादों को पूर्ण करने के मध्य रोकें हैं। और हे झूठों के गिरोह! हम तुम्हारे वादों पर विश्वास नहीं करते। यदि तू सच्चों में से है और झूठों तथा वादा-भंग करने वालों में से नहीं और तू अपने इनाम की प्रतिज्ञा में सच्चा है और अपने निश्चय में प्रतिज्ञा-भंग करने की नीयत नहीं तो उत्तम बात जो खतरों के पर्दों को हटा दे और सन्देहों को जड़ से उखाड़ दे तथा ऐसे मार्ग की ओर मार्ग-दर्शन करे जो झगड़े को समाप्त कर दे तो वह यह है कि तू सुशील प्रतिष्ठित रईस के पास वह इनाम की राशि जमा करा दे और झगड़ा समाप्त करने के लिए हम इस बात पर सहमत हैं कि तू उसे शेख ग़ुलाम हसन या ख़्वाजा यूसुफ शाह या मीर महमूद शाह के पास जमा करा दे और इस उद्देश्य से हम उन से हस्तलिखित पत्र ले लें। क्या तू तैयार है कि उस राशि को ऐसे व्यक्ति के पास जो मेरे और तेरे बीच समान दर्जा (श्रेणी) रखता है, जमा करा दे या फिर तू न्याय करने वालों का मार्ग अपनाना ही नहीं चाहता? हमें मालूम नहीं जो तुम्हारे दिल के तहखाने में छिपा हुआ है। अगर तो तुम ने यह पुस्तक सही नीयत से लिखी है और अपनी प्रकृति (फितरत) की खराबी से नहीं लिखी तो शक्तिपूर्वक खड़ा हो जा और अत्याचार की ओर न झुक और अगर तू सच्चा है तो जैसा हमने कहा है वैसा ही कर। हम पूरी तैयारी

से तेरे पास आए हैं हम मुंह फेरने वाले नहीं और न डरने वाले हैं बल्कि हम आगे बढ़ेंगे चाहे वह शेर के मुक़ाबले पर हो। और हम तुझ जैसे लोगों से भयभीत होने वाले नहीं बल्कि हम युद्ध के समय उन्हें लोमड़ियों जैसा समझते हैं और हमने यह प्रण कर लिया है कि तेरे अन्त:करण की छान-बीन करें और तेरे थैले को अच्छी तरह से झाड़ दें तथा तेरी छोटी मश्क के बंध को खोल दें और ऐसा कम ही हुआ है कि कोई महा झूठा बच निकला हो या धोखा उसके लिए लाभदायक हुआ हो। साल भर हमने न बुरा-भला कहा न किसी काफ़िर कहने वाले और अपमानित करने वाले को उत्तर दिया। हमने धैर्य धारण किया और उनका अहंकार देखा यहाँ तक कि उनके शब्दों की कठोरता ने हमें अपशब्दों की सज़ा देने पर विवश किया और सांपों का इलाज डंडे और पत्थर हैं। अत: हम झूठों के पर्दे उठाने के लिए उठ खड़े हुए।

हम लम्बी चौड़ी बात की ओर ध्यान नहीं देते। हम चाहते हैं कि तू अपना चाँदी सोना हमारे सामने प्रकट करे और अपनी रकम वर्णित व्यक्तियों में से किसी एक के पास जमा कराए। और तू उन से यह कहे कि जब वे तुझे पराजित देखें तो तेरी रक़म वे मुझे देदें। फिर यदि तूने ऐसा न किया तो तेरा झूठ स्पष्ट हो जाएगा और तेरा प्रतिज्ञा को भंग करना बदनामी का कारण होगा। सुनो झूठों पर अल्लाह की लानत होती है और सुनो-सुनो कि उन पर भी अल्लाह की लानत होती है जो अपनी प्रतिज्ञा भंग करने तथा अपने वादों से फिर जाने वाले हैं और जो कहते तो हैं परन्तु करते नहीं और समझौते तो करते हैं और उन्हें पूरा नहीं करते और धोखे बाज़ और षड्यंत्र करने वालों की भांति बातचीत करते हैं। अत: ऐसे लोगों पर अल्लाह, फ़रिश्तों और सब लोगों की लानत है। अत: तू अल्लाह की लानत से डर और सच्चों की तरह अपने वादे को पूरा कर और यदि तू वादा पूरा नहीं कर सकता और धनवानों की तरह तेरे पास माल नहीं है तो फिर अपनी सहायता के लिए ऐसे लोगों को तलाश कर जो तेरे ज़ख्मों का इलाज कर सकतें हों और तेरे हाथ और बाज़ू बन सकते हों। फिर अगर तो वे तेरा सत्यापन (तस्दीक़) करने वाले श्रद्धालु हुए तो मुरीदों की भांति तेरी सहायता करेंगे। क्योंकि क़ौम का कर्तव्य है कि वे आर्थिक तौर पर खराब हाल मनुष्य की सहायता, क़ैदी की आज़ादी, उलेमा का सम्मान और शुभचिन्तकों की शुभचिन्ता (भलाई) करें। यद्यपि तुझ से एक दिरहम की भी मांग नहीं की जाएगी परन्तु मध्यस्थों की गवाही के बाद, और जहां तक फैसले का संबंध है तो यह मध्यस्थता, फैसला राशि जमा होने के पश्चात् दो मध्यस्थों की ओर से होगी। हम यह मामला तेरे सुपुर्द करते हैं और इसकी सब बातों का तुझे पूर्ण अधिकार है। यदि तुम दो झूठे निर्णायक भी नियुक्त करोगे तो हमें वे भी सहर्ष स्वीकार होंगे। और हम उनके झूठ और असत्य को अनदेखा कर देंगे। हां यद्यपि उन दोनों निर्णायकों से महा प्रतापी ख़ुदा की क़सम देकर पूछेंगे और उन दोनों निर्णायकों पर अनिवार्य होगा कि वे खुल्लम खुल्ला शपथ उठाएं कि उन्होंने सच बात की है। फिर हम उन्हें एक वर्ष तक मोहलत देंगे और हम अत्यधिक खबर रखने वाले और महा विद्वान ख़ुदा के दरबार में दुआ के लिए हाथ फैलाएंगे फिर यदि इस अवधि में दुआ की स्वीकारिता का कोई स्पष्ट निशान प्रकट न हुआ तो हम अल्लाह तआला को गवाह ठहराते हैं कि (इस स्थिति में) हम बिना किसी सन्देह एवं शंका के तुम्हारी सच्चाई का इक़रार कर लेंगे और तुन्हें सच्चों में से समझेंगे। (शेष.....) (पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 30-35)

सम्पादकीय

विश्व युद्ध के भयानक परिणाम

जमात अहमदिया के वर्तमान खलीफा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अपने एक भाषण में विश्व को सावधान करते हुए कहते हैं:

"...हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब मानव प्रयास विफल हो जाते हैं तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर मानवजाति के भाग्य को निश्चित करने के लिए अपने निर्णय को जारी करता है। इससे पूर्व कि परमेश्वर का निर्णय जारी हो और वह लोगों को अपनी ओर आने तथा मानवजाति के अधिकारों को पूर्ण करने पर विवश करे यह उचित होगा कि विश्व के लोग स्वयं इन महत्त्वपूर्ण मामलों की ओर ध्यान दें, क्योंकि परमेश्वर को कार्यवाही करने पर विवश किया जाता है तब उस का क्रोध वास्तव में मनुष्य को एक कठोर और भयानक ढंग से पकड़ता है।

वर्तमान संसार में परमेश्वर के निर्णय का एक भयानक प्रकटन एक अन्य विश्व-युद्ध के रूप में हो सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसे युद्ध के प्रभाव तथा उस के द्वारा विनाश केवल उस युद्ध तक या केवल वर्तमान पीढ़ी तक सीमित नहीं होंगे अपितु उसके भयानक परिणाम कई भावी पीढ़ियों तक प्रभावी होंगे। ऐसे युद्ध के इन भयानक परिणामों में से एक यह है कि इन युद्धों का प्रभाव नवजात शिशुओं पर तथा भविष्य में जन्म लेने वाले बच्चों पर भी पड़ेगा। आधुनिक शस्त्र इतने विनाशकारी हैं कि भविष्य में जन्म लेने वाली कई पीढ़ियों पर उनके भयानक आनुवांशिक और शारीरिक प्रभाव पड़ेंगे।

जापान ही एक ऐसा देश है जिसने एटमी युद्ध के नितान्त भयानक परिणाम देखे हैं उस पर द्वितीय विश्व-युद्ध के मध्य एटम बम से आक्रमण किया गया। आज भी यदि आप जापान जाएं और वहां के लोगों से मिलें तो आप उस युद्ध का एक पूर्ण भय और उसकी घृणा उनकी आंखों में देखेंगे और जो कुछ वे कहते हैं उससे भी प्रकट होता है। हालांकि वे एटम बम जो उस समय प्रयोग किए गए तथा जिन्होंने बहुत अधिक विनाश किया वे आज के परमाणु शस्त्रों की अपेक्षा जो कि आज छोटे-छोटे देशों के पास भी हैं, बहुत कम शक्ति वाले थे।

कहा जाता है कि जापान में यद्यपि कि सात दशक गुज़र चुके हैं तथापि एटम बम के प्रभाव नवजात शिशुओं में अब भी प्रकट हो रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति को गोली मारी गई हो तब भी प्राय: उपचार के द्वारा उसका बच जाना संभव होता है परन्तु यदि रासायनिक युद्ध आरंभ हो जाता है तो जो भी उसकी लपेट में आएंगे उनका ऐसा भाग्य नहीं होगा। इसके विपरीत हम देखेंगे कि लोग अचानक मरेंगे और मूर्तिवत हो जाएंगे तथा उनकी खालें पिघलने लगेंगी, पीने का पानी, भोजन और सब्ज़ियां दूषित हो जाएंगी और विकिरण (Radiation) से प्रभावित होंगी। हम केवल इस बात की कल्पना ही कर सकते हैं कि ऐसा प्रदूषण किस प्रकार के रोगों का कारण बनेगा। वे स्थान जहां पर सीधे तौर पर आक्रमण न हो और जहां इस विकिरण (Radiation) के प्रभाव कुछ कम होंगे वहां पर भी रोगों का ख़तरा बहुत अधिक होगा और भावी नस्लों को बड़े ख़तरों से गुज़रना होगा।

अत: जैसा कि मैंने कहा है कि ऐसे युद्ध के विनाशकारी और भयानक प्रभाव केवल युद्ध या उसके बाद

तक ही सीमित न होंगे अपितु भविष्य की अनेकों पीढ़ियों तक चलते चले जाएंगे। यह ऐसे युद्ध के वास्तविक परिणाम हैं। हालांकि इसके बावजूद आज स्वार्थी और मूर्ख लोग विद्यमान हैं जिन्हें अपने इन आविष्कारों पर बड़ा गर्व है और उन्होंने विश्व-विनाश के लिए जो कुछ विकसित किया है उसको वे उपहार के रूप में वर्णन करते हैं। वास्तविकता यह है कि रासायनिक शक्ति और टैक्नालॉजी का नाममात्र लाभप्रद पक्ष भी असावधानी या दुर्घटनाओं के कारण बहुत भयानक हो सकता है तथा महाविनाश की ओर ले जा सकता है। हम इससे पूर्व इस प्रकार की आकस्मिक आपदाओं को देख चुके हैं। इसी प्रकार की एक घटना 1986 ई. में चेरनोबिल (Chernobyl) अर्थात यूक्रेन में हुई और गत वर्ष ही जापान में भूकम्प और सुनामी के पश्चात् घटना हुई। यह भी बहुत भयानक थी इसने पूरे देश को भयभीत कर दिया। जब ऐसी घटनाएं प्रकट होती हैं तो फिर घटनाग्रस्त क्षेत्रों का पुर्ननिर्माण एवं पुनर्वास भी बहुत कठिन कार्य होता है। अपने एकमात्र और भयानक एवं दुखदायी अनुभवों के कारण जापानी अत्यधिक सतर्क हो गए हैं और नि:सन्देह उनके भय का अहसास यथोचित है।

यह एक स्पष्ट बात है कि लोग युद्धों में मरते हैं और जापान भी द्वितीय विश्व-युद्ध में सम्मिलित हुआ तो उसकी सरकार और उसके लोग इस बात से भली-भांति परिचित थे कि कुछ लोग मारे जाएंगे। कहा जाता है कि जापान में लगभग तीन मिलियन (तीस लाख) लोग मारे गए। यह देश की कुल जनसंख्या का चार प्रतिशत (4%) बनता था, यद्यपि कि मरने वालों की कुल संख्या की दृष्टि से बहुत से अन्य देश भी बहुत प्रभावित हुए, तथापि युद्ध के प्रति जो नफ़रत और घृणा हम जापानी लोगों में देखते हैं वह अन्य की अपेक्षा बहुत अधिक होती है। निश्चय ही इसका कारण वे दो परमाणु बम हैं जो द्वितीय विश्व-युद्ध के समय जापान पर गिराए गए जिसके परिणाम वे आज भी देख रहे हैं और वे आज तक उन परिणामों को सहन कर रहे हैं। जापान ने बहुत शीघ्र अपने शहरों की पुनर्स्थापना करके अपनी श्रेष्ठता और शोक से उभरने की भावना और शक्ति को सिद्ध कर दिया है परन्तु यह स्पष्ट रहे कि यदि आज पुन: परमाणु शस्त्र प्रयोग किए गए तो बहुत संभव है कि कुछ विशेष देशों के भाग पूर्ण रूप से विश्व-मानचित्र से समाप्त हो जाएं और उनका अस्तित्व ही शेष न रहे।

द्वितीय विश्व-युद्ध में मरने वालों की संख्या एक अनुमान के अनुसार लगभग बासठ मिलियन है और यह बताया जाता है कि मारे गए लोगों में चालीस मिलियन सामान्य नागरिक थे। इस प्रकार सेना की अपेक्षा जन सामान्य अधिक मारे गए। यह विनाश इस वास्तविकता के बावजूद हुआ कि जापान के अतिरिक्त यह युद्ध अन्य स्थानों पर पारंपरिक शस्त्रों के साथ हुआ था।

U.K. (यू.के) को लगभग पांच लाख लोगों की हानि झेलनी पड़ी। यद्यपि यह उस समय उपनिवेशवादी शक्ति था और उसके उपनिवेशों ने भी उसके समर्थन में युद्ध किया। यदि हम उनकी हानियों को भी सम्मिलित कर लें तो मरने वालों की संख्या कई मिलियन तक पहुंच जाती है।

केवल भारत में सोलह लाख लोग मृत्यु का शिकार हुए।" (विश्व संकट तथा शांतिपथ 57-61)

मैंने उस भाषण का कुछ अंश यहाँ उल्लेख किया है जिससे विश्व युद्ध के भयानक परिणामों का आभास किया जा सकता है। अब भी समय है दुनिया को समझ जाना चाहिए ताकि हमारी भावी पीढ़ी ऐसे विनाश से सुरक्षित रह सकें। अल्लाह इस दुनिया को विनाश से बचाए।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 24.5.2024
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

इस्लाम की सत्यनिष्ठ ख़िलाफ़त की बरकतें
तथा ईमान वर्धक वृत्तान्तों (वाक़ियात) का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला का हम पर उपकार है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई जिनके माध्यम से अल्लाह तआला ने इस्लाम के पुनर्जागरण का वादा फ़रमाया था। आप अलै. अल्लाह तआला के वादों के अनुसार और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोईयों के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में दीन-ए-इस्लाम के नवीकरण के लिए अल्लाह तआला की ओर से भेजे गए और फिर अल्लाह तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वादों के अनुसार ही आप अलै. की बनाई हुई जमाअत में ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी हुआ। अतएव ये अल्लाह तआला के वादे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई के पूरा होने की अभिव्यक्ति है जिसके कारण हम हर साल, हर जगह जहाँ जहाँ अहमदिया जमाअत क़ायम है, २७ मई को ख़िलाफ़त दिवस मनाते हैं।

२६ मई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निधन हुआ, तथा २७ मई को जमाअत ने ख़ुदा के वादों के अनुसार हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन रज़ी. का ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के रूप में चुनाव करके आप रज़ी. के हाथ पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के काम को जारी रखने का संकल्प किया। आप रज़ी. की वफ़ात के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. के हाथ पर जमाअत जमा हुई। फिर तीसरी ख़िलाफ़त और चौथी ख़िलाफ़त का दौर शुरु हुआ। हर दौर में दुश्मन ने जमाअत को नष्ट करने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु हर दृष्टि से विफलता का मुंह

देखा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. के निधन के पश्चात अल्लाह तआला ने अपने वादे को पूरा करने का जलवा दिखाया तथा पाँचवीं ख़िलाफ़त का चुनाव हुआ। फ़रमाया- अल्लाह तआला ने मेरी असंख्य दुर्बलताओं के बावजूद मुझे बहुमूल्य समर्थन एंव सहायता प्रदान की, उन्नति का क़दम आगे से आगे ही बढ़ता गया। दर्जनों देशों में अहमदियत का पौधा लगा, अहमदिया जमाअत का निज़ाम मूल रूप से क़ायम हुआ, सैंकड़ों नगरों तथा कसबों में स्वयं अल्लाह तआला ने लोगों का मार्ग दर्शन करके ख़िलाफ़त के समर्थन एवं सहायता के दृश्य दिखाकर लोगों के दिलों में ख़िलाफ़त से सम्बंध की भावना पैदा करके निष्ठावान लोगों की जमाअतों की स्थापना के साधन पैदा फ़रमाए तथा ये दृश्य दिखाता चला जा रहा है।

अत: न अल्लाह तआला अपने वादों को भूलने वाला एवं तोडऩे वाला है और न ही अपने सबसे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोईयों को पूरा करने में कमी करने वाला है। हम भाग्यशाली हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िलाफ़त अला मिनहाजे नबुव्वत (नबुव्वत के सतमार्ग पर चलने वाली ख़िलाफ़त) की पेशगोई को पूरा होते हुए देखने वाले हैं। अतएव जो वास्तव में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम की जमाअत के साथ जुड़ कर रहने वाले हैं, वे अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते रहेंगे, इन्शाअल्लाह। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया कि मेरे बाद भी मेरी जमाअत में मेरी ख़िलाफ़त का सिलसिला आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार जारी रहेगा। आप अलै. ने फ़रमाया- मैं ख़ातमुल ख़ुलफ़ा हूँ, अब जो भी आएगा, जिसको अल्लाह तआला ख़िलाफ़त का स्तर देगा, मेरे अनुकरण में ही आएगा। अत: संसारिक रूप से कोई जितना चाहे ज़ोर लगा ले, कभी ख़िलाफ़त का क़याम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अलग होकर नहीं हो सकता।

अतएव जब आप अलै. के निधन का समय निकट आया तो आप अलै. ने ख़िलाफ़त के जारी रहने की सूचना देते हुए फ़रमाया- अल्लाह तआला दो प्रकार की क़ुदरत ज़ाहिर करता है। पहली स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है, दूसरी ऐसे समय पर जब नबी की वफ़ात के बाद कठिनाईयों का सामना पैदा हो जाता है तथा दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं तथा समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया, तथा विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत नष्ट हो जाएगी तथा स्वयं जमाअत के लोग भी असमंजस में पड़ जाते हैं तथा उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई भाग्यहीन जमाअत से विमुख होने की राहे निकाल लेते हैं तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी सशक्त क़ुदरत को प्रकट करता है तथा गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अन्त तक धैर्य रखता है, ख़ुदा तआला के उस चमत्कार को देखता है। फ़रमाया- सो हे प्रियजनो! जब अनंतकाल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है, ता विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को बरबाद करके दिखलावे, सो अब संभव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरानी सुन्नत को छोड़ दे। इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास बयान की, दु:खी मत हो तथा तुम्हारे दिल चिंतित

न हो जाएँ क्यूँकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत को देखना भी निश्चित है और उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्यूँकि वह स्थाई है जिसका सिलसिला क़यामत तक नहीं टूटेगा, और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ।

इसके साथ ही मैं यह भी बता दूँ कि मैं तो इस बात से भी अर्थ निकालता हूँ कि जो लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आयु पर विवाद में पड़े हुए हैं, उनका भी इसमें जवाब है कि आप अलै. ने अपनी आयु के वर्षों की गणना करके यह नहीं बताया कि इतने साल शेष हैं बल्कि अपनी वापसी का संकेत दिया है तथा आयु पर चर्चा करने को कोई महत्त्व नहीं दिया, बल्कि काम पूरा करने का महत्त्व है। आप अलै. ने फ़रमाया- मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी, जैसा कि बराहीने अहमदिया में वादा है, और वह वादा मेरे अस्तित्व के विषय में नहीं है बल्कि तुम्हारे बारे में वादा है। जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरी अनुयायी है क़यामत तक दूसरों पर ग़ल्ब: दूँगा। सो अवश्य है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे, ता बाद इसके वह दिन आवे जो स्थाई है। वह हमारा ख़ुदा अपने वादों का सच्चा तथा वफ़ादार एवं सादिक़ ख़ुदा है। वह सब कुछ तुम्हें दिखलाएगा, जिसका उसने वादा फ़रमाया है। यद्यपि ये दिन दुनिया के अन्ति दिन हैं और अनेक बलाएँ हैं जिनके नाज़िल होने का समय है, पर अवश्य है कि यह दुनिया क़ायम रहे जब तक वे समस्त बातें पूरी न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी है।

अल्लाह तआला के वादे के अनुसार आप अलै. के निधन के बाद हर एक ख़िलाफ़त के दौर में जमाअत प्रगति की ओर अग्रसर है तथा सदैव की भांति ख़ुदा तआला दूर सुदूर के देशों में बैठे लोगों के दिलों में, जिन्होंने कभी किसी ख़लीफ़: को देखा भी नहीं है, स्वयं मार्ग दर्शन करते हुए ख़िलाफ़त के झंडे तले आने की हिदायत देता है। कुछ लोगों के वृत्तांत भी पेश कर देता हूँ जिनसे ख़िलाफ़ते अहमदिया के साथ अल्लाह तआला के समर्थन तथा उसके वादे पूरे होने का दृश्य हम देखते हैं।

बुर्कीनाफ़ासो की एक जमाअत में पहली बार एम.टी.ए. लगा तथा लोगों ने पहली बार वर्तमान ख़लीफ़: को देखा तो उनकी आँखें में आँसू थे तथा ख़ुशी उनके चेहरों से झलक रही थी। कहने लगे- एम.टी.ए. पर वर्तमान ख़लीफ़: को देख कर हमारी आँखों को शीतलता एवं संतोष की अनूभूति होती है।

अमीर साहब गैम्बिया लिखते हैं कि एक मोटर मकैनिक ने संयोगवश एम.टी.ए. पर मुझे कोई सम्बोधन करते हुए देखा तो कहने लगे कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस व्यक्ति को ख़ुदा तआला का समर्थन प्राप्त है। अतएव इस सज्जन पुरुष ने अपने परिवार के १४ लोगों सहित बैअत कर ली।

जर्मनी के सेक्रेटरी तबलीग़ लिखते हैं कि एक अरब निवासी इनके स्टाल पर आए तथा क़ुर्आन करीम का अनुवाद ले गए। जलसा सालाना जर्मनी में आने की उनको दावत दी गई। कुछ व्यस्त होने के कारण उन्होंने अपने बड़े भाई तथा एक अन्य परिवार के सदस्य को भिजवा दिया।

जलसे पर मेरे भाषण सुनने के बाद उनके भाई कहने लगे कि यह व्यक्ति नि:सन्देह ख़ुदा तआला द्वारा समर्थन दिया गया है तथा वे उसी रात बैअत फ़ॉर्म को भर कर अहमदिया जमाअत में शामिल हो गए।

कैमरोन के एक नगर में आठ परिवार बैअत करके जमाअत में शामिल हो गए। नौ-मुबाइयीन का कहना है कि एम.टी.ए. ने हमारे बच्चों का जीवन बदल दिया है। उनमें से एक युवा को स्कूल टीचर मेरा सम्बोधन सुनने के लिए छुटटी नहीं देता था, उसने कहा कि मैं स्कूल छोड़ सकता हूँ परन्तु ख़ुत्ब: जुम्अ: नहीं।

बुर्कीनाफ़ासो में भी एक व्यक्ति ने मुझे एम.टी.ए. पर देखा तो कहा कि मैं तो इनको सपने में देख चुका हूँ। वह उसी समय बिना किसी दलील के अहमदियत में दाखिल हो गया तथा उसके गाँव के काफ़ी लोगों ने अहमदियत क़बूल कर ली। अब ख़ुदा की कृपा से उस गाँव में एक मज़बूत जमाअत स्थापित हो चुकी है।

हुज़ूरे अनवर ने इसी क्र म में कुछ अन्य देशों, कोंगो कंशासा, सेनेगाल, बैल्जियम, गिनी बसाव, किर्गिस्तान, नाईजेरिया तथा माली से अहमदिया ख़िलाफ़त के साथ अल्लाह के समर्थन एवं सहायता तथा उसके वादे पूरे होने के नज़ारों पर आधारित और अधिक ईमान वर्धक घटनाएँ भी पेश फ़रमाईं। तत्पश्चात फ़रमाया- ये कुछ वृत्तांत हैं जिनसे ख़ुदा के समर्थन की अभिव्यक्ति होती है कि अल्लाह तआला स्वयं लोगों के दिल खोल रहा है। गैरों के दिल में अहमदिया ख़िलाफ़त का प्रभाव जमा रहा है, नेक प्रकृति के लोगों को ख़िलाफ़त के साथ जोड़ रहा है। अहमदिया ख़िलाफ़त के इतिहास का हर दिन इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला ही अहमदिया ख़िलाफ़त की सहायता एवं समर्थन फ़रमा रहा है तथा जमाअत हर दिन प्रगतिशील है। अल्लाह तआला मुझे भी अपने फ़ज़्ल से इस दायित्व को पूरा करने का सामथ्र्य प्रदान करे तथा हर एक अहमदी को भी सम्पूर्ण वफ़ा एवं निष्ठा के साथ सदैव ख़िलाफ़ते अहमदिया से जोड़े रखे तथा वे समस्त उद्देश्य अल्लाह तआला पूरे फ़रमाए जिनका उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया है और अहमदिया ख़िलाफ़त के माध्यम से ख़ुदाए वाहिद का शासन दुनिया में क़ायम हो और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का झंडा दुनिया में लहराने का दृश्य दुनिया देखे।

ख़ुत्ब: के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम चौधरी नसरुल्लाह ख़ान साहब तथा मुकर्रम कंवर इदरीस साहब का सद्गर्नन फ़रमाया एवं मृतकों के जनाज़े की नमाज़ गायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व
(लेखक- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़िअल्लाहु अन्हो)

हदीस से मसीह की मृत्यु का प्रमाण

पाठकों ने उपरोक्त वर्णन से यह भली-भांति समझ लिया होगा कि क़ुर्आन करीम ईसा अलैहिस्सलाम के सशरीर जीवित रहने की आस्था (विचारधारा) का दूर से ही खण्डन कर रहा है और यद्यपि आयत इस बात की आवश्यकता शेष नहीं छोड़ती कि इस आस्था के बारे में हदीस से भी गवाही तलाश की जाए, परन्तु पाठकों की अत्यधिक सन्तुष्टि के लिए आवश्यक मालूम होता है कि हदीस से भी मसीह की मृत्यु का कुछ प्रमाण दे दिया जाए ताकि सन्देह का कोई स्थान न रहे। अत: स्पष्ट हो कि हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि :-

مَامِنْ نَفْسٍ مَنْفُوْسَةٍ الْيَوْمَ يَاْتِىْ عَلَيْهَا مِائَةُ سَنَةٍ وَهِىَ يَوْمَئِذٍ حَيَّةٌ

(सही मुस्लिम)

अर्थात् *"समस्त वे लोग जो आज जीवित हैं वे एक सौ वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् जीवित न रहेंगे।"*

यह हदीस बड़ी स्पष्टता के साथ मसीह की मृत्यु पर फ़ातिहा पढ़ रही है। स्पष्ट है कि यदि मसीह अब भी जीवित है तो वह अवश्य ही नबी करीम (स.अ.व.) के समय भी जीवित होगा और यदि वह उस समय जीवित था तो निश्चय ही वह सौ वर्ष के अन्दर-अन्दर मर चुका होगा। फिर इसी पर बस नहीं और लीजिए। एक और हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि:-

اِنَّ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ عَاشَ عِشْرِيْنَ وَمِائَةَ سَنَةٍ

(तिबरानी व मुस्तदरक हाकिम)

अर्थात् *"ईसा इब्ने मरयम एक सौ बीस वर्ष जीवित रहे थे।"*

यह हदीस तो किसी संदेह और संशय की गुंजायश ही नहीं छोड़ती बल्कि मसीह की आयु का निर्धारण करके स्पष्ट तौर पर उनकी मृत्यु को सिद्ध कर रही है तथा इस विवाद को आगे बढ़ाने की आवश्यकता शेष नहीं रहने देती, परन्तु हमारा उद्देश्य तो यथासम्भव सन्तुष्टि कराना है, इसलिए एक और हदीस प्रस्तुत है। आंहज़रत (स.अ.व.) फ़रमाते हैं :-

لَوْ كَانَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى حَيَّيْنِ لَمَا وَسِعَهُمَا اِلَّا اتِّبَاعِىْ

(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द-2, पृष्ठ-246)

अर्थात् "यदि मूसा तथा ईसा जीवित होते तो उन्हें भी मेरे आज्ञापालन के सिवाए कोई चारा न होता।"

सुब्हान अल्लाह इस हदीस ने तो विवाद का अन्त ही कर दिया, मसीह की मृत्यु पर सहस्त्रों सूर्य उदय कर दिए और इस समस्या के किसी दूरस्थ कोने तक में अंधकार नहीं रहने दिया, परन्तु इसी पर अन्त नहीं मे'राज की हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) ने वर्णन किया है कि जब मैं दूसरे आसमान पर

गया तो मैंने वहां यह्या और ईसा को देखा (बुख़ारी, मुस्लिम) अब यह सर्वमान्य बात है कि हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है और उनकी रूह (आत्मा) इस पार्थिव शरीर से पृथक हो चुकी है। इसलिए सिद्ध हुआ कि मसीह भी मृत्यु पा चुके हैं, क्योंकि मुर्दों में वही व्यक्ति रहता है जो स्वयं मृत्यु पा चुका हो। ऐसा तो हो नहीं सकता कि मुर्दों के अन्दर एक जीवित को रख दिया जाए। अब आप ने देखा कि किस स्पष्टता के साथ क़ुर्आन करीम और सही हदीसें मसीह को मृत्यु-प्राप्त सिद्ध कर रही हैं। इससे अधिक और क्या होगा कि क़ुर्आन करीम ने स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि मसीह आसमान पर नहीं उठाया गया बल्कि उस का 'रफ़ा' उन्हीं अर्थों में हुआ जिन अर्थों में समस्त सदात्मा पुरुषों का मृत्योपरान्त रफ़ा हुआ करता है। फिर यही नहीं बल्कि मसीह के अपने मुख से इक़रार करवा दिया कि भाइयो मुझे अकारण ही जीवित क्यों मान रहे हो मैं तो अपनी उम्मत के बिगडऩे से पूर्व मृत्यु पा चुका हूँ। अत: इस पर अल्लाह तआला ने अपना फ़ैसला भी सुना दिया कि देखो कि नबी करीम (स.अ.व.) से पूर्व जितने भी नबी गुज़रे हैं वे सब मृत्यु पा चुके हैं, फिर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की हदीस मसीह की आयु भी बता रही है कि एक सौ बीस वर्ष हुई और फिर स्पष्ट शब्दों में कह रही है कि यदि मूसा और ईसा जीवित होते तो वे भी नबी करीम (स.अ.व.) का अनुसरण करने पर विवश होते। इन स्पष्ट सबूतों की मौजूदगी में फिर भी यदि कोई व्यक्ति अपनी हठधर्मी को नहीं छोड़ता तो उसे अधिकार है, हमने अपनी ओर से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर दिया। अब ऐसे लोगों का मामला ख़ुदा के साथ है।

अध्याय-तृतीय

(मृत्यु प्राप्त लोग दोबारा जीवित होकर इस संसार में वापस नहीं आते)

कुछ लोग जब मसीह की मृत्यु की चर्चा स्पष्ट तौर पर क़ुर्आन करीम और हदीसों में देखते हैं तो फिर वे यह पहलू धारण करते हैं कि क्या हुआ यदि मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो चुका, ख़ुदा उसे जीवित करके संसार में दोबारा ले आएगा। इसके उत्तर में स्मरण रखना चाहिए कि इस संसार में मुर्दों का दोबारा जीवित होकर आ जाना इस्लामी शिक्षा और ख़ुदा के नियम के सरासर विरुद्ध है। क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाता है:-

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ۔ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ۔

(सूरह मोमिनून रुकू 1)

अर्थात् "तुम पैदा किए जाने के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगे और फिर प्रलय के दिन ही दोबारा जीवित किए जाओगे।"

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया है कि मृत्योपरान्त जीवित किए जाने का समय प्रलय का दिन ही है, इस से पूर्व कदापि नहीं। फिर फ़रमाया:-

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (सूरह मोमिनून रुकू-6)

अर्थात् "जो लोग मर जाते हैं उनके और इस संसार के बीच एक रोक हो जाती है जो प्रलय के दिन तक रहेगी।"

इस आयत ने बड़ी स्पष्टता के साथ इस बात का निर्णय कर दिया कि जो व्यक्ति मर जाए वह प्रलय को ही जीवित किया जाएगा। प्रलय से पूर्व उसके और इस संसार के मध्य अल्लाह तआला ने एक रोक रख दी है जो केवल प्रलय के दिन उठाई जाएगी।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

(सूरह अंबिया रुकू-7)

अर्थात् "जिन लोगों को हम मार देते हैं उन पर अवैध है कि वे इस संसार की ओर वापस लौटें।"

फिर नबी करीम (स.अ.व.) की एक हदीस है जो इस समस्या का बिल्कुल ही समाधान कर देती है। आप (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि 'उहद' के युद्ध में जब जाबिर रज़ि. के पिता शहीद हुए तो उन से ख़ुदा तआला ने वादा किया कि जो मांगोगे मैं तुम्हें दूँगा। उन्होने कहा कि हे मेरे ख़ुदा! मुझे फिर जीवित किया जाए ताकि मैं इस्लाम के मार्ग में फिर युद्ध करूँ और पुन: अपने प्राण दूँ। ख़ुदा तआला ने इसके उत्तर में फ़रमाया कि :-

سَبَقَ الْقَوْلُ مِنِّيْٓ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ

(तिरमिज़ी रिवायत जाबिर रज़ि. से)

अर्थात् " ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि मैं पहले से सैद्धान्तिक निर्णय कर चुका हूँ कि जो लोग मर जाते हैं वे पुन: इस संसार में वापस नहीं लौटेंगे।"[1]★

इस हदीस के पश्चात् मेरे विचार में किसी अन्य सबूत की आवश्यकता नहीं रहती, परन्तु आश्चर्य है कि हमारे कुछ मौलवी लोग न केवल मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम को मृत्यु प्राप्त स्वीकार करके फिर उसके दोबारा संसार में आने के अभिलाषी हैं बल्कि स्वयं मसीह अलैहिस्सलाम की ओर वास्तविक मुर्दों का इसी संसार में जीवित करना सम्बद्ध कर रहे हैं, हालांकि जिन अर्थों में मसीह ने मुर्दे जीवित किए उन अर्थों में तो समस्त नबी मुर्दे जीवित करते आए हैं तथा आंहज़रत (स.अ.व.) ने सब से अधिक मुर्दे जीवित किए। वास्तव में कठिनाई यह होती है कि ज्ञान के अभाव के कारण लोग प्रत्येक शब्द के प्रत्यक्ष अर्थों पर दृढ़ हो जाते हैं हालांकि कभी एक शब्द रूपक और कल्पना के तौर पर प्रयोग होता है उदाहरणतया क़ुर्आन करीम में आया है कि:-

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल रुकू-8)

★इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि ख़ुदा ने स्वयं कहा कि कुछ मांगो और फिर मांगने वाला शहीद और श्रेष्ठ स्तर का सहाबी था, परन्तु चूंकि यह प्रश्न ख़ुदा के ठोस निर्णय और नियम के विपरीत था इसलिए नकारात्मक उत्तर मिला। इसी से।

अर्थात् "जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह आख़िरत (परलोक) में भी अंधा ही होगा।"

यहां सब की सहमति है कि यहां अंधे से अभिप्राय आध्यात्मिक (रूहानी) अंधा है न कि शारीरिक अंधा, परन्तु मालूम नहीं कि मसीह के मामले में मुर्दे से आध्यात्मिक मुर्दा क्यों अभिप्राय नहीं लिया जाता। नबी करीम (स.अ.व.) के बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है:-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ

(सूरह अन्फ़ाल रुकू-3)

अर्थात् "हे मोमिनो! तुम अल्लाह की बात मान लिया करो और रसूल की आवाज़ पर भी कान धरा करो जब कि वह तुम्हें बुलाए क्योंकि वह तुम्हें जीवित करता है।"

देखो नबी करीम (स.अ.व.) के बारे में कितनी स्पष्टता पूर्वक जीवित करने का शब्द आया है, परन्तु यहां हमारे विरोधी भी आध्यात्मिक जीवन अभिप्राय लेते हैं, परन्तु जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इसी प्रकार के शब्द आते हैं तो वहां वास्तविक मुरदों का जीवित करना अभिप्राय ले लिया जाता है। अफ़सोस सौ बार अफ़सोस कि हमारे मौलवियों ने मसीह नासिरी के सम्मान को द्वैतवाद की सीमा तक पहुँचा रखा है तथा उसकी तुलना में अपने स्वामी के सम्मान की भी परवाह नहीं की।

हमारे विरोधी जब इस बात में भी तंग आ जाते हैं और देखते हैं कि क़ुर्आन करीम मुर्दों का इसी संसार में जीवित हो जाना निषिद्ध ठहरा देता है तो कहते हैं कि नि:सन्देह ख़ुदा का सामान्य नियम यही है कि मुर्दे दोबारा जीवित होकर इस संसार में नहीं आते, परन्तु क्या ख़ुदा समर्थ नहीं कि मसीह अलैहिस्सलाम की यदि मृत्यु हो भी चुकी है तो उसे जीवित करके इस संसार में ले आए? अब देखिए कि यह भी कोई तर्क है? कौन इन्कार करता है कि ख़ुदा समर्थ नहीं है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि किसी बात में अल्लाह तआला की क़ुदरत का होना इस बात का प्रमाण नहीं है कि वास्तव में वह बात हो भी गई है। विचार करो कि क्या अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ नहीं कि नबी करीम (स.अ.व.) को जीवित करके दोबारा संसार में ले आए। अत: क्या इस से सिद्ध होगा कि नबी करीम (स.अ.व.) दोबारा जीवित होकर आ जाएंगे? फिर क्या ख़ुदा समर्थ नहीं कि उसी समय प्रलय आ जाए। अत: क्या इस से सिद्ध हो गया कि उसी समय प्रलय आ भी गई? ऐसे तर्क सुनकर इस युग के मौलवियों की बुद्धि और विवेक पर रोना आता है कि उनकी दशा कैसी गिर चुकी है। भाइयो! ख़ुदा की क़ुदरत इस बात को सिद्ध नहीं करती कि जिस वस्तु पर उसे क़ुदरत है वह वास्तव में हो भी गई। उस का घटित होना तो तब सिद्ध हो कि तुम इस बात का सबूत दो कि ख़ुदा ने बाद में इस मामले में अपने नियम का त्याग करके अपनी विशेष अपवादीय शक्ति का प्रयोग किया। हम इसी बात को तो सिद्ध कर रहे हैं कि इसके बावजूद कि ख़ुदा मुर्दों को जीवित करके इस संसार में वापस लाने पर समर्थ है, फिर भी उसने अपना यह नियम निर्धारित कर रखा है कि वह ऐसा नहीं करता। फिर यह भी विचार करो कि यदि ख़ुदा की क़ुदरत पर ही निर्णय करना है तो क्या ख़ुदा इस बात पर समर्थ नहीं कि इसी उम्मत में से मसीह अलैहिस्सलाम को पैदा कर दे, बल्कि

विचार करो तो ख़ुदा की क़ुदरत का अत्यधिक जल्वा इस बात में है कि इसी उम्मत में से मसीह मौऊद पैदा करे न कि पूर्व मसीह को दोबारा लाए। एक वस्तु को संभाल-संभाल कर रखने की आवश्यकता केवल उस व्यक्ति को पड़ती है जो डरता है कि यदि यह वस्तु नष्ट हो गई तो फिर उस की प्राप्ति दुष्कर हो जाएगी और मैं उसकी सदृश नहीं बना सकूँगा, परन्तु जो व्यक्ति समर्थ होता है वह अपने नियम के विपरीत वस्तुओं को सम्भाल-सम्भाल कर नहीं रखता, क्योंकि वह जानता है कि जब आवश्यकता होगी मैं ऐसी अनेकों वस्तुएं पैदा कर लूँगा। अत: ख़ुदा की क़ुदरत का जल्वा तो इस बात में अधिक प्रकट होता है कि वह कोई नया मसीह बना कर इस उम्मत में भेजे न कि पहले मसीह को ही दो हज़ार वर्ष सुरक्षित रखकर वापस भेज दे। अत: मैं कहता हूँ कि ख़ुदा ने यदि किसी मृत्यु प्राप्त को ही जीवित कर के दोबारा भेजना था तो फिर नबी करीम को ही क्यों न भेजा जाए। क्या मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम हमारे नबी करीम (स.अ.व.) की तुलना में अधिक सुधार कर लेगा। अफ़सोस सौ अफ़सोस।

كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا لَذِبًا

अध्याय-चतुर्थ

क़ुर्आन तथा हदीस से सिद्ध है कि आने वाला मसीह दूसरा है जो इसी उम्मत में से होगा

अत: जब कि यह सिद्ध हो चुका कि क़ुर्आन करीम और हदीसें इस बात पर सर्वसम्मति से साक्ष्य दे रहे हैं कि मसीह नासिरी पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर नहीं उठाया गया बल्कि मृत्यु को प्राप्त हो चुका है तथा यह कि जो व्यक्ति मृत्यु पा जाता है वह दोबारा इस संसार में नहीं लाया जाता। अत: इस से अनिवार्य परिणाम यह भी निकला कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा परन्तु अतिरिक्त सन्तुष्टि के लिए मैं इस सैद्धान्तिक परिणाम को ही पर्याप्त नहीं समझता बल्कि अपने पाठकों को बताता हूँ कि क़ुर्आन करीम और हदीसों में स्पष्टतापूर्वक उल्लेख है कि आने वाला मसीह और है जो इसी उम्मत में से होगा।

नबी करीम (स.अ.व.) के समस्त ख़लीफ़े आपकी ही उम्मत में से होंगे

ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है:-

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(सूरह नूर रुकू-7)

अर्थात् "हे मुसलमानो! अल्लाह तआला वादा करता है उन लोगों से जो तुम में से उच्च श्रेणी का ईमान लाए तथा उन्होंने उच्च कर्मों का आदर्श प्रदर्शित किया कि ख़ुदा अवश्य ही उन्हें पृथ्वी पर ख़लीफ़ा बनाएगा जिस प्रकार कि उसने उन लोगों को ख़लीफ़ा बनाया जो उन से पूर्व गुज़र चुके।"

इस आयत में अल्लाह तआला वादा करता है कि वह मुसलमानों में से नबी करीम (स.अ.व.) के उसी प्रकार ख़लीफ़े बनाएगा जिस प्रकार कि उसने मूसा के सिलसिले में बनी इस्राईल में से मूसा के

ख़लीफ़े बनाए। अब यह बात प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हज़रत मूसा के पश्चात् अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल में बहुत से ख़लीफ़े भेजे जो तौरात की सेवा करते थे तथा बनी इस्राईल को सच्चाई के मार्गों में क़ायम रखते थे। मूसा के ख़लीफ़ों का यह क्रम मसीह नासिरी (ईसा अलैहिस्सलाम) के अस्तित्व में अपनी चरम सीमा को पहुँचा, तत्पश्चात् मुसलमानों के साथ भी इसी प्रकार के ख़लीफ़ों के सिलसिले का वादा दिया गया और ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मूसा के सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा इस्राईली मसीह हुआ उसी प्रकार यह ख़ुदाई फैसला था कि अन्तिम युग में मुसलमानों में भी एक मसीह भेजा जाएगा जो इस्लामी ख़लीफ़ों की श्रंखला को पूर्ण करने वाला और चरम सीमा तक पहुँचाने वाला होगा। उपरोक्त आयत हमें बताती है कि मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले तथा मुहम्मद (स.अ.व.) के सिलसिले में स्पष्ट समानता है, जैसा कि 'कमा' (كَمَا) के शब्द से स्पष्ट है अब यदि मुहम्मदी सिलसिले का मसीह मूस्वी सिलसिले के मसीह से पृथक कोई अस्तित्व नहीं रखता बल्कि वही है जो हज़रत मूसा के सिलसिले के अन्त में प्रकट हुआ तो समानता मिथ्या ठहरती है, क्योंकि समानता प्रतिकूलता को चाहती है अर्थात् यह आवश्यक होता है कि उपमेय और उपमान दो भिन्न-भिन्न अस्तित्व हों। अत: सिद्ध हुआ कि मुहम्मदी मसीह अलैहिस्सलाम मूस्वी मसीह अलैहिस्सलाम से पृथक व्यक्तित्व रखता है। इस बात को भली-भांति स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि दोनों सिलसिलों में सामान्य समानता का होना भी आवश्यक है, परन्तु इन दोनों के प्रारम्भ और अन्त में तो विशेष और स्पष्ट समानता का होना आवश्यक है, क्योंकि प्रारम्भ और अन्त ही किसी सिलसिले का निर्धारण और परिसीमन करने वाले होते हैं। जब हम क़ुर्आनी निर्देशन के अन्तर्गत दोनों सिलसिलों के आरम्भ अर्थात् मूसा अलैहिस्सलाम और आंहज़रत (स.अ.व.) के मध्य समानता को स्वीकार करते हैं तो उनके अन्त में भी समानता अवश्य मानना पड़ेगी और जब समानता हुई तो प्रतिकूलता अनिवार्य तौर पर मानी जाएगी।

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने इस आयत में मिन्कुम (अर्थात् तुम में से) का शब्द रख कर समस्त विवाद की जड़ काट दी है और स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि मुहम्मदी सिलसिले के ख़लीफ़े मुसलमानों में से ही होंगे। यह स्थान आँखें बन्द करके गुज़र जाने वाला नहीं। आदरणीय पाठक भली-भांति विचार करें कि मुसलमानों से अल्लाह तआला का निश्चित वादा है कि जिस प्रकार हज़रत मूसा के पश्चात् तौरात की सेवा के लिए ख़लीफ़े भेजे गए, इसी प्रकार नबी करीम (स.अ.व.) के पश्चात् क़ुर्आन और इस्लाम की सेवा के लिए भी ख़लीफ़े भेजे जाएंगे और ये ख़लीफ़े मुसलमानों में से ही होंगे। अत: यह कितना अन्याय है कि अपनी हठ पूर्ण करने के लिए मुहम्मदी सिलसिले का अन्तिम और सब से महान् ख़लीफ़ा बनी इस्राईल में से सोचा जाए और इस प्रकार ख़ुदा के वादे को जो उसने मिन्कुम के शब्द में किया है रद्दी की तरह फेंक दिया जाए और उम्मते मुहम्मदिया को उम्मते मूसविया का पराश्रय बनाया जाए? जिस मनुष्य के हृदय में लेशमात्र भी ईमान और स्वाभिमान हो वह कभी भी इस बात का साहस नहीं कर सकता कि सर्वोत्तम उम्मत को मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का भिखारी बनाए। ख़ुदा तो स्पष्ट शब्दों में वर्णन कर रहा है कि देखो मुसलमानों! मैं तुम्हारे अन्दर इस्लाम की सेवा के लिए जो ख़लीफ़े भेजूँगा वे तुम में से ही होंगे, परन्तु हमारे

मौलवियों के हृदय मसीह नासिरी के प्रेम में द्वैतवाद के ऐसे स्तर तक पहुँच चुके हैं कि ख़ुदा के स्पष्ट वादे के विपरीत अपने सुधार के लिए अकारण बनी इस्राईल के पैरों पर गिर रहे हैं। ख़ुदा उन्हें उठाना चाहता है तथा उनका सम्मान स्थापित करना चाहता है और उन पर इनाम करना चाहता है परन्तु वे अपने अपमान के इच्छुक हैं। ख़ुदा कहता है कि देखो मैं तुम पर इनाम करता हूँ कि तुम्हारे अन्दर ख़लीफ़े तुम में से ही भेजे जाएंगे, परन्तु मुसलमान हैं कि छोटे-मोटे ख़लीफ़ों के संबंध में तो मानते हैं कि इसी उम्मत में से ही होंगे, परन्तु जब अन्तिम और महान् ख़लीफ़ा का प्रश्न आता है तो उस समय बनी इस्राईल की ओर देखने लग जाते हैं। ख़ुदा इस क़ौम पर दया करे यह कहां आकर गिरी! क़ुर्आन मुसलमानों को सब उम्मतों से उत्तम ठहरा रहा है, परन्तु मुसलमान यह तो ईमान रखते हैं कि आंहज़रत (स.अ.व.) के आदेशानुसार यहूदी बनने के लिए हमारे अन्दर से ही उपद्रवी लोग पैदा होंगे, परन्तु जहां उन्नति का प्रश्न आता है वहां मुहम्मदी मसीह को बनी इस्राईल में से लाने के अभिलाषी हैं! नितान्त खेद! क्या मुसलमानों के भाग में बिगाड़ ही रह गया है और सुधारक बाहर से आएगा।

मसीह नासिरी दोबारा नहीं उतरेंगे

फिर आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (सूरह माइदह रुकू-16) जो मसीह की मृत्यु के सबूत में ऊपर प्रस्तुत की जा चुकी है वह इस मामले में भी सबूत के तौर पर प्रस्तुत की जा सकती है क्योंकि यदि असम्भव के तौर पर मान भी लिया जाए कि **फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी** के अर्थ ये हैं कि "जब तूने मुझे पूरा उठा लिया" और फिर हम असम्भव के तौर पर यह भी मान लें कि उठा लेने से आकाश की ओर ही उठा लेना अभिप्राय है तब भी यह आयत इस बात पर तो अटल सबूत है कि मसीह आकाश से नहीं उतरेगा, क्योंकि यह बात तो बहरहाल मान्य है कि हज़रत ईसा प्रलय के दिन अपनी उम्मत के बिगड़ जाने के संबंध में अपनी अज्ञानता प्रकट करेंगे। अत: सिद्ध हुआ कि प्रलय के दिन से पूर्व वह अपनी उम्मत को बिगाड़ की अवस्था में कभी नहीं देखेंगे अर्थात् उन्हें प्रलय से पूर्व यह ज्ञान कभी प्राप्त न होगा कि मेरी उम्मत ने मुझे उपास्य बना लिया है, परन्तु हम ऊपर बता चुके हैं कि यदि अन्तिम दिनों में स्वयं मसीह नासिरी ही उतरेंगे तो यह निश्चित है कि उन्हें अपनी उम्मत के बिगड़ जाने का ज्ञान हो जाएगा विशेषकर जब कि मसीह मौऊद का बड़ा कार्य ही सलीब तोडऩा है तो ऐसी अवस्था में अज्ञानता का प्रकटन कैसा? अत: यह बात निश्चित है कि यदि असम्भव की कल्पना करते हुए मान भी लें कि मसीह आकाश पर चले गए हैं तो फिर भी आने वाला मसीह निश्चय ही और है तथा मसीह नासिरी वहीं आकाश पर किसी स्थान पर मृत्यु पाकर दफ़्न कर दिए गए होंगे क्योंकि उनका आकाश पर होना उन्हें मृत्यु से तो नहीं बचा सकता। देखिए आयत :- كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ

तथा फ़रमाया:-

يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ

हदीस स्पष्ट तौर पर बता रही है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा

फिर क़ुर्आन करीम ही नहीं बल्कि हदीस भी स्पष्ट शब्दों में बता रही है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से

होगा। नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

كَيۡفَ اَنۡتُمۡ اِذَا نَزَلَ ابۡنُ مَرۡيَمَ فِيۡكُمۡ وَاِمَامُكُمۡ مِنۡكُمۡ

(बुख़ारी किताब बदउलख़ल्क)

“अर्थात् क्या ही अच्छा हाल होगा तुम्हारा हे मुसलमानो! जब मसीह इब्ने मरयम तुम में उतरेंगे और वह इमाम होंगे तुम्हारे, तुम्हीं में से।”[2]★

(शेष...)

★कुछ लोग इस हदीस के ये अर्थ करते हैं कि शब्द اِمَامُكُمۡ منكم मसीह के बारे में नहीं है बल्कि महदी के बारे में हैं जो मसीह के युग में अवतरित होगा और मुसलमानों का इमाम होगा, परन्तु बात यह है कि हम ने हदीस सही बुख़ारी से ली है, जिसमें महदी के प्रकटन का कोई अध्याय ही नहीं रखा गया, जिसका कारण यह है कि महदी के बारे में हदीसों में ऐसी गड़बड़ और ऐसा मतभेद है कि किसी हदीस के बारे में पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता कि वह सही है। अत: अब यहि इस हदीस में اِمَامُكُم منكم के शब्द महदी के बारे में होते तो आवश्यक था कि इमाम बुख़ारी रह. जो हदीस से आचार्यों के सब से बड़े इमाम हैं वह महदी का अध्याय स्थापित करके इस हदीस को महदी के उतरने के सन्दर्भ में भी वर्णन करते, परन्तु वह यह हदीस केवल मसीह के सन्दर्भ में लाए हैं तथा महदी की चर्चा तक नहीं की, जिस से सप्षट है कि इमाम साहिब ने कभी اِمَامُكُم منكم के शब्दों का संकेत महदी की ओर नहीं समझा क्योंकि यदि वह ऐसा समझते तो वह इस हदीस को महदी के उतने के सबूत में प्रस्तुत करते। यही हाल इमाम मुस्लिम का है, बल्कि इमाम मुस्लिम ने तो اِمَامُكُم के स्थान पर اَمَّكُمۡ की रिवायत वर्णन करके निर्णय ही कर दिया है।

★ ★ ★

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

जमाअत अहमदिया में सम्मिलित होने के लिए क्या शर्तें हैं?

बैअत की कुछ शर्तों की सरल शब्दों में व्याख्या

अनुवादक- फरहत अहमद आचार्य

जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने उन लोगों के लिए जो जमाअत अहमदिया में सम्मिलित होना चाहते हैं 10 शर्तें निर्धारित की थीं जिनका पालन करना हर एक अहमदी के लिए ज़रूरी है:

बैअत की पहली शर्त

"बैअत करने वाला (दीक्षित होने वला) सच्चे दिल से इस बात की प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में उस समय तक कि कब्र में दाख़िल हो जाए शिर्क (अल्लाह तआला के साथ देवी-देवताओं और अन्य सृष्टि की उपासना का सिद्धान्त अर्थात् अनेकेश्वरवाद) से बचता रहेगा।"

ख़ुदा तआला शिर्क को माफ़ नहीं करेगा।

अल्लाह तआला क़ुर्आन मजीद में फ़र्माता है :

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا

इसका अर्थ यह है कि अल्लाह इस बात को हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका शरीक (साझीदार) ठहराया जाये। और इसके अतिरिक्त जिसके लिए वह चाहे सब कुछ माफ़ कर देगा। और जो अल्लाह का शरीक (साझीदार) ठहराये तो समझो कि उसने बहुत बड़ा गुनाह गढ़ लिया। (सूर: निसा आयत नं. 49)

हज़रत अकदस मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय में फ़रमाते हैं :

"इसी तरह खुदा ने क़ुर्आन में फ़र्माया :

وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِکَ۔الخ

"कि हर एक गुनाह की बख़शिश होगी मगर शिर्क को ख़ुदा नहीं बख़्शेगा। अत: शिर्क के निकट मत जाओ और उसको हुर्मत (धर्मनिषेध) का वृक्ष समझो।"

(ज़मीमा तोहफ़ा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 323-324 हाशिया)

फिर फ़र्माया "यहाँ से शिर्क सिर्फ़ यही अभिप्राय नहीं कि पत्थरों वग़ैरह की इबादत की जाय, बल्कि ये एक शिर्क है कि भौतिक साधनों की इबादत की जावे। और सांसारिक आराध्यों पर ज़ोर दिया जावे। इसी का नाम शिर्क है।" (अल हकम जिल्द 7, नम्बर 24 पृष्ठ 11 दिनाँक 30 जून सन् 1903 ई.)

फिर क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़र्माता है :

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ

इसका अर्थ यह है और जब लुक़मान ने अपने बेटे से , जब वह नसीहत उसे कर रहा था कहा कि ऐ मेरे प्यारे बेटे! अल्लाह के साथ शरीक (साझीदार) न ठहरा, शिर्क वास्तविक रूप में एक बहुत बड़ा ज़ुल्म है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत में शिर्क का डर था। अत: एक हदीस है कि ओबादा बिन नसी ने हमें शद्दाद बिन ओस के बारे में बताया कि वो रो रहे थे, उनसे पूछा गया कि आप क्यों रो

रहे हैं ? इस पर उन्होंने कहा मुझे एक ऐसी चीज़ याद आ गयी थी जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी थी उस पर मुझे रोना आ गया। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना था आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़र्माया – मैं अपनी उम्मत के बारे में शिर्क और छुपी हुई इच्छाओं से डरता हूँ। रावी (रिवायत करने वाले) कहते हैं कि मैंने पूछा है अल्लाह के रसूल ! क्या आपकी उम्मत आपके बाद शिर्क में ग्रस्त हो जायेगी? उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया ! हां ! लेकिन मेरी उम्मत सूरज, चाँद एवं मूर्तियों और पत्थरों की इबादत तो नहीं करेंगे, मगर अपने कार्यों में दिखावे से काम लेंगे। और छुपी हुई इच्छाओं में ग्रस्त हो जायेंगे। अगर उनमें से कोई रोज़ेदार होने की हालत में सुबह करेगा फिर उसे उसकी कोई इच्छा (ख़्वाहिश) उसमें रुकावट बनी तो वह रोज़ा छोड़ कर उस ख़्वाहिश को पूरा करने में लग जायेगा। (मसनद अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 124 प्रकाशन बेरूत)

शिर्क की विभिन्न किस्में

जैसा कि इस हदीस से स्पष्ट है कि ज़ाहिरी शिर्क पत्थरों, मूर्तियों और चाँद की इबादत करके न भी हो तो दिखावा और इच्छाओं का अनुसरण भी शिर्क है। अगर एक मातहत अपने अफ़सर की आज्ञापालन से बढ़कर ख़ुशामद की हद तक उसके पीछे घूमता है और सोचता है कि उससे मेरी रोज़ी संबद्ध है तो ये भी शिर्क की ही एक क़िस्म है। अगर किसी को अपने बेटों पर गर्व है कि मेरे इतने बेटे हैं और ये बड़े हो रहे हैं, और काम पर लग जायेंगे, कमायेंगे, मुझे संभालेंगे और अब मैं आराम से अपनी शेष उम्र गुज़ारूँगा या मेरे इन जवान बेटों की वजह से मेरे साझीदार मेरा मुकाबला नहीं कर सकेंगे (उपमहाद्वीप बल्कि सारी तीसरी दुनिया में साझेदारी की एक बड़ी गन्दी रस्म है) अर्थात पूर्ण निर्भरता उन बेटों पर है। और वह अवज्ञाकारी निकलते हैं या किसी दुर्घटना में मर जाते हैं या अपाहिज हो जाते हैं तो व्यक्ति के तमाम् सहारे खत्म हो गये।

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं :

"तौहीद सिर्फ इस बात का नाम नहीं कि मुँह से 'ला इलाहा इल्लल्लाहो' (अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं) कहें और दिल में हज़ारों बुत जमा हों। बल्कि जो व्यक्ति अपने किसी काम और चालबाज़ी, धोखा, और युक्ति को ख़ुदा की सी महत्ता देता है या किसी इन्सान पर भरोसा करता है जो ख़ुदा तआला पर करना चाहिए या स्वयं को वह मर्तबा देता है जो ख़ुदा को देना चाहिए, इन सब हालतों में वह ख़ुदा तआला के नज़दीक बुत परस्त है। बुत सिर्फ वही नहीं है जो सोने या चाँदी या पीतल या पत्थर इत्यादि से बनाए जाते हैं और उन पर भरोसा किया जाता है। बल्कि हर एक चीज़, और कथन या कर्म जिसको वह महत्ता दी जाय जो ख़ुदा तआला का हक़ है वह ख़ुदा की नज़र में बुत है। ... स्मर्ण रहे कि वास्तविक तौहीद जिसका इक़रार ख़ुदा हमसे चाहता है और जिसके इक़रार से मुक्ति संबद्ध है, यह है कि ख़ुदा तआला को अपनी ज़ात में हर एक शरीक़ (साझीदार) से चाहे बुत हो, चाहे इन्सान हो, चाहे सूरज हो या चाँद, या अपना वजूद या अपना उपाय या चालबाज़ी हो, उससे पाक साफ समझना और उसके मुक़ाबिल पर कोई ताकतवर और शक्तिमान न ख़्याल करना कोई अन्नदाता न मानना, कोई इज़्ज़त और ज़िल्लत देने वाला ख़्याल न करना कोई सहायक या मददगार न ठहराना। और दूसरे ये कि अपना प्रेम उसी से ख़ास करना, अपनी इबादत उसी से ख़ास करना।

अपनी विनम्रता उसी से ख़ास करना, अपनी उम्मीदें उसी से खास करना और अपना डर उसी से खास करना। अत: कोई तौहीद इन तीन किस्म की विशेषताओं के बग़ैर पूर्ण नहीं हो सकती। प्रथम हस्ती के लिहाज़ से तौहीद अर्थात् यह कि उसकी हस्ती के सामने दुनिया की सारी चीज़ों को मादूम (नष्ट) होने वाली समझना। और सबको हलाक होने वाली चीज़ तथा वास्तविकता से परे ख़्याल करना। द्वितीय विशेषताओं के लिहाज़ से तौहीद अर्थात् यह कि पालनहार और ईश्वरीय विशेषताएं अल्लाह के सिवा किसी ओर को न देना। और जो विभिन्न प्रकार के परवरिश करने वाले (पालक) या फ़ायदा पहुँचाने वाले नज़र आते हैं ये उसी के हाथ की एक व्यवस्था समझना। तृतीय अपनी मुहब्बत और प्रेम तथा सच्चाई और खूबी के लिहाज़ से तौहीद अर्थात् मुहब्बत इत्यादि इबादत के तौर तरीकों में दूसरे को ख़ुदा तआला का शरीक (साझीदार) न ठहराना और उसी में खोये जाना।"

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 12, पृष्ठ 349-350)

इसकी पहले संक्षिप्त रूप में व्याख्या कर दी है हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हों इस सबन्ध में फ़र्माते हैं :-

अल्लाह तआला के सिवा, उसके किसी नाम, या काम और किसी इबादत में किसी दूसरे को शरीक करना, ये शिर्क है और तमाम् भले काम अल्लाह तआला ही की खुशी हासिल करने के लिए करे, इसका नाम इबादत है। लोग मानते हैं कि कोई पैदा करने वाला ख़ुदा तआला के सिवा नहीं। और ये भी मानते हैं कि मौत और ज़िन्दग़ी ख़ुदा तआला ही के हाथ में और पूर्ण कब्ज़ा और सामर्थ्य में है, ये मानकर भी दूसरो के लिए सज्दा करते हैं, झूठ बोलते हैं और परिक्रमा करते हैं। ख़ुदा की इबादत छोड़ कर दूसरों की इबादत करते हैं। ख़ुदा तआला के रोज़ो को छोड़कर दूसरों के रोज़े रखते और ख़ुदा तआला की नमाज़ों की परवाह न करते हुए अल्लाह के सिवा दूसरों की नमाज़ें पढ़ते हैं, और उनके लिए ज़कातें देते हैं। इन सब झूठे विचारों को दुर करने के लिए अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा। (ख़ुत्बाते नूर, पृष्ठ 7, 8)

बैअत की दूसरी शर्त

"यह कि झूठ और व्यभिचार और बुरी दृष्टि प्रत्येक दुराचार और अत्याचार और ख़यानत (धरोहर को हानि पहुँचाना) और कलह और विद्रोह की नीतियों से बचता रहेगा और तामसिक आवेगों के समय उनके वशीभूत नहीं होगा चाहे कैसा ही उत्तेजक भाव पेश आए।"

इस शर्त में नौ प्रकार की बुराईयों का वर्णन किया गया है। प्रत्येक बैअत करने वाले को जो अपने आपको हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने का दावा करता है इन बुराईयों से बचना है।

सबसे बड़ी बुराई झूठ

वास्तविक रूप में तो सबसे बड़ी बुराई झूठ है। इसलिए जब किसी व्यक्ति ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ये कहा कि मुझे कोई ऐसी नसीहत करें जिस पर मैं अमल कर सकूँ क्योंकि मेरे अन्दर बहुत सी बुराइयाँ हैं और सारी बुराईयों को मैं छोड़ नहीं सकता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया

कि यह प्रतिज्ञा करो कि सदा सच बोलोगे और कभी झूठ नहीं बोलोगे। इस कारण से उसकी एक-एक करके सारी बुराइयाँ छूट गयीं। क्योंकि जब कभी उसे किसी बुराई का ख़्याल आता और साथ ही वह सोचता कि जब पकड़ा गया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश हूँगा। झूठ न बोलने का वादा किया है। सच बोला तो शर्मिन्दगी होगी या सज़ा मिलेगी। इस तरह धीरे-धीरे उसकी सारी बुराइयाँ ख़त्म हो गयीं। वास्तव में झूठ ही तमाम् बुराइयों की जड़ है।

अब मैं इसकी विस्तृत व्याख्या करता हूँ। क़ुर्आन करींम में अल्लाह तआला फ़र्माता है:-

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ (अल्-हज आयत नम्बर 31)

बख़्शी है। तो यह बात उसके लिए उसके रब्ब के निकट अच्छी है। और तुम्हारे लिए चौपाये हलाल कर दिये गये सिवाय उनके जिनका वर्णन तुम से किया जाता है। अत: अपवित्रता से दूर रहो और झूठ बोलने से बचो। यहाँ शिर्क के साथ झूठ का भी वर्णन किया गया है फिर फ़र्माया कि .

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ (अल् ज़ुमर आयत नम्बर 4)

अर्थात सावधान ! निर्मल दीन ही अल्लाह की शान के मुनासिब है। और वो लोग जिउन्होंने उसके सिवा दोस्त बना लिए हैं (कहते हैं कि) हम इस उद्देश्य के सिवा उनकी इबादत नहीं करते कि वे हमें अल्लाह के निकट करते हुए निकटता के ऊँचे स्थान तक पहुँचा दें। अल्लाह उसे कभी हिदायत नहीं देता जो झूठा और सख़्त नाशुक्र (अकृतज्ञ) हो।

सहीह मुस्लिम में एक हदीस है अब्दुल्लाह बिन अम्र इब्ने अलआस रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया चार बातें ऐसी हैं जो जिसमें पायी जायें। वह पक्का दोग़ला है। और जिसमें उनमें से एक बात पायी जाय उसमें दोग़लेपन की एक आदत पायी जाती है जब तक कि वह उसको छोड़ दे।

1. जब वह बातें करता है तो झूठ से काम लेता है । (अर्थात् जब वह बातें कर रहा होता है तो उसमें झूठ की मिलावट होती है और झूठी बाते कर रहा होता है।)
2. और जब संधि करता है तो ग़द्दारी करता है।
3. और जब वह वादा करता है तो वादाख़िलाफ़ी करता है। (यह भी झूठ की एक किस्म है)।
4 और जब वह झगड़ता है तो गाली गलौच से काम लेता है।

ये सारी बातें झूठ से सबन्ध रखने वाली हैं।

फिर एक हदीस है हज़रत इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैहि) बयान करते हैं कि मुझे ये ख़बर मिली है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाया करते थे कि तुम्हे सच्च बोलना चाहिए क्योंकि सच्चाई

नेकी की तरफ रहनुमाई करती है। और नेकी जन्नत की तरफ। झूठ से बचो क्योंकि झूठ नाफ़रमानी की तरफ़ ले जाता है। और नाफ़रमानी जहन्नम तक पहुँचा देती है। क्या आपको मालूम नहीं कहा जाता है कि उसने सच बोला और फ़र्माबर्दार हो गया और झूठ बोला तो दुराचार में ग्रस्त हो गया।

(मौता इमाम मालिक भाग- मा जा फीस्सिदक़े वलकिज्बे)

फिर मसनद् अहमद बिन हम्बल की एक हदीस है हज़रत अबू हुरैर: (रज़ियल्लाहो अन्हो) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि जिसने किसी छोटे बच्चे को कहा कि आओ मैं तुम्हें कुछ देता हूँ फिर वह उसको कुछ नहीं देता तो यह बात भी झूठ में शामिल होगी।

(मसनद् अहमद बिन हम्बल जिल्द 2, पृष्ठ 452, प्रकाशन बेरूत)

ये तरबियत के लिए बहुत ज़रूरी है। बच्चों की तरबियत के लिए देखें, मज़ाक में बी ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए वरना इसी तरह मज़ाक में ही बच्चों को झूठी बातें करने की आदत पड़ जाती है । जो आगे चलकर जब पक्की आदत हो जाये तो झूठ बोलने में भी कोई संकोच नहीं करते, और इसको एहसास ही ख़त्म हो जाता है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हों बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया, सच्चाई नेकी की तरफ ले जाती है। और नेकी जन्नत की तरफ। और जो इन्सान हमेशा सच बोले। वह अल्लाह तआला के नज़दीक सिद्दीक़ लिखा जाता है। और झूठ पाप और दुराचार की तरफ ले जाता है। और दुराचार जहन्नम की तरफ। और जो आदमी हमेशा झूठ बोले वह अल्लाह तआला के यहाँ अत्यन्त झूठा लिखा जाता है।

(बुख़ारी किताबुल अदब भाग क़ौलुल्लाह इत्तकुल्लाहा व कूनू मअस्सादिक़ीन)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहो अन्हो) रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और पूछा कि हे अल्लाह के रसूल! जन्नत का कर्म क्या है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया सच बोलना और जब कोई इन्सान सच बोलता है तो वह फ़र्मांबरदार बन जाता है। और जब फ़र्मांबरदार बन जाता है तो वास्तविक मोमिन बन जाता है। और जब कोई वास्तविक मोमिन हो जाता है तो अन्तत: वह जन्नत में दाख़िल हो जाता है। उस व्यक्ति ने पुन: पूछा कि हे अल्लाह के रसूल ! नर्क में ले जाने वाला कौन सा कर्म है? आँहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया –झूठ। एक व्यक्ति झूठ बोलता है तो नाफ़रमानी करता है। और जब कोई नाफ़रमानी करता है तो कुफ्र करता है। और जब कोई कुफ्र पर क़ायम हो जाता है तो वह अन्तत: नर्क में दाख़िल हो जाता है। (मसनद् अहमदबिन हम्बल जिल्द 2, पृष्ठ 176, प्रकाशन बेरूत)

हज़रत अक़दस मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं :

क़ुर्आन शरीफ़ ने झूठ को भी एक नापाकी और गन्दग़ी क़रार दिया है। जैसा कि फ़र्माया :-

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ (अल् हज, आयत नं. 31)

देखो यहाँ झूठ को बुत के मुक़ाबले पर रखा है। और वास्तविक रूप से झूठ भी एक बुत ही है। वरना सच्चाई को छोड़कर दूसरी तरफ क्यों जाता है? जिस तरह बुत के नीचे कोई वास्तविकता नहीं होती उसी तरह झूठ के नीचे बनावटीपन के अलावा और कुछ भी नहीं होता। झूठ बोलने वालों का ऐतबार इतना कम हो जाता है

कि अगर वह सच कहें तब भी यही ख़्याल होता है कि उसमें भी कुछ झूठ की मिलावट न हो। अगर झूठ बोलने वाले चाहें कि हमारा झूठ कम हो जाय तो जल्दी से दूर नहीं होता लम्बे समय तक अभ्यास करें तब जाकर उनको सच बोलने की आदत होगी।" (मलफ़ूज़ात जिल्द 3, पृष्ठ 350)

हज़रत अक़दस मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम और फ़रमाते है:

"और मनुष्य की समस्त स्वाभाविक अवस्थाओं के जो उसके स्वभाव का गुण सच्चाई है। जब तक कोई मनुष्य स्वार्थ की भावना से प्रेरित न हो झूठ बोलना नहीं चाहता। और झूठ को अपनाने में एक प्रकार की घृणा और तकलीफ़ अपने दिल में पाता है। यही कारण है कि जिस व्यक्ति का स्पष्ट झूठ सिद्ध हो जाय उससे अप्रसन्न होता है और उसको हेयदृष्टि से देखता है। लेकिन सिर्फ़ यही स्वाभाविक हालत सदाचार में शामिल नहीं हो सकती, बल्कि बच्चे और पागल भी इसके पाबन्द रह सकते हैं। इसलिए वास्तविकता यह है कि जब तक इन्सान उन तमाम् स्वार्थनिहित भावनाओं को छोड़ नहीं देता जो सच्चाई में बाधक होती हैं तब तक वास्तविक रूप में सत्यावादी नहीं ठहर सकता। क्योंकि अगर इन्सान सिर्फ़ ऐसी बातों में सच बोले जिनमें उसका कोई नुकसान नहीं, और अपने मान-सम्मान या धन और प्राणों के नुकसान के समय झूठ बोल जाय और सच बोलने में खामोश रहे तो उसको पागलों और बच्चों पर क्या विशेषता है? क्या पागल और नाबालिग़ लड़के भी ऐसा सच नहीं बोलते ? संसार में ऐसा कोई भी नहीं होगा कि जो बिना किसी प्रेरणा के अकारण झूठ बोले। अत: ऐसा सत्य जो किसी नुकसान के समय छोड़ा जाय वास्तविक सदाचार में हरगिज़ शामिल नहीं होगा। सच बोलने का सबसे महत्वपूर्ण मौक़ा और महल वही है जिसमें अपना जान या माल या इज़्ज़त का डर हो। इस में ख़ुदा की यह शिक्षा है:

(فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ (الحج آیت ۳۱)

(وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا (البقرة آیت ۲۸۳)

(وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَن يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ (البقرة آیت ۲۸۴)

(وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ (الانعام آیت ۱۵۳)

(كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ (النساء آیت ۱۳۶)

(وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا (المائدة آیت ۹)

(وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ (الاحزاب آیت ۳۶)

(وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ (العصر آیت ۴)

इन का अनुवाद करते हुए आप फ़र्माते हैं :

मूर्तिपूजा और झूठ बोलने से बचो, अर्थात झूठ भी एक बुत है जिस पर भरोसा करने वाला ख़ुदा भरोसा छोड़ देता है अत: झूठ बोलने से ख़ुदा भी हाथ से जाता है और फिर फ़र्माया कि जब तुम सच्ची गवाही के लिए बुलाये जाओ तो जाने से इन्कार मत करो। और सच्ची गवाही को मत छुपाओ और जो छुपायेगा उसका दिल पापी है। और जब तुम बोलो तो वही बात मुँह पर लाओ जो पूर्णत: सत्य और न्याय की बात हो। चाहे

तुम अपने किसी निकटतम् सबन्धी के प्रति गवाही दो। सच और इन्साफ़ पर क़ायम हो जाओ , और चाहिए कि हर एक गवाही ही तुम्हारी ख़ुदा के लिए हो। झूठ मत बोलो चाहे सच बोलने से तुम्हारे प्राणों को नुकसान पहुँचे, या उससे तुम्हारें मां-बाप को कष्ट पहुँचे या और निकटतम् सबन्धियों जैसे पुत्रादियों को। और चाहिए कि किसी जाति की दुश्मनी तुम्हें सच्ची गवाही से न रोके। सच्चे पुरुष और सच्ची स्त्रियाँ बड़े-बड़े पुण्य पायेंगे। उनकी यह विशेषता होती है कि वे दूसरों को भी सच का उपदेश देते हैं। और झूठों की सभाओं में नहीं बैठते। (इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी, रूहानी ख़ज़ाएन जिल्द 10, पृष्ठ 360-361)

व्यभिचार से बचो

फिर इसी दूसरी शर्त में व्यभिचार से बचने की शर्त है। तो इसके बारे में अल्लाह तआला फ़र्माता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَا إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا (बनी इस्राईल आयत नम्बर 33)

व्यभिचार के क़रीब मत जाओ, यह पूर्णत: बेहयाई और बहुत ही बुरा रास्ता है।

एक हदीस में मुहम्मद बिन् सीरीन से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निम्नलिखित बातों को नसीहत फ़र्मायी फिर एक लम्बी रिवायत बयान की जिसमें एक नसीहत यह है कि इफ़्फ़त अर्थात पाकदामिनी और सच्चाई, व्यभिचार और झूठी बातों की अपेक्षा अच्छी और हमेशा बाकी रहने वाली है। (सुनन दारमी, किताबुल वसाया, भाग मा यस्तहब्बा बिल वसीये मिनत्तसह्हुदे वल कलामे)

यहाँ व्यभिचार और झूठ दोनों को इकट्ठे बयान किया गया है। इससे ये भी पता चलता है कि झूठ कितना बड़ा गुनाह है।

हज़रत अक़दस मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि :

व्यभिचार के क़रीब मत जाओ अर्थात् ऐसे प्रोग्रामों से दूर रहो जिनसे दिल में ऐसा ख़्याल पैदा हो सकता हो और उन राहों को मत चुनों जिनसे इस गुनाह के होने का डर हो। जो व्यभिचार करता है, वह बुराई को चरमसीमा तक पहुँचा देता है। व्यभिचार की राह बहुत बुरी है। अर्थात् असल उद्देश्य से रोकती है। और तुम्हारी आख़िरी मंजिल के लिए बहुत ख़तरनाक है। और जिसको निकाह (शादी) की तौफ़ीक न मिले उसे चाहिए कि अपनी पाकदामिनी को दूसरे तरीकों से बचाए। उदाहरणत : रोज़े रखे या कम खाये या अपनी शक्ति से बढ़कर काम ले।" (इस्लामी उसलू की फ़िलास्फ़ी रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 10, पृष्ठ 342)

आपने फ़रमाया है कि ऐसी चीज़ों से दूर रहो जिनसे ख़्याल भी दिल में पैदा हो सकता हो। नौजवानों में किसी समय यह एहसास नहीं रहता फिल्में देखने की आदत होती है। और ऐसा फिल्में देखते हैं जो योग्य नहीं होती कि देखी जाए अख़लाक़ से बहुत गिरी हुई होती है। उनसे भी बचना चाहिए। यह भी व्यभिचार की एक किस्म ही है।

बद् नज़री (अर्थात् कुदृष्टि) से बचो

फिर दूसरी शर्त में तीसरी किस्म की बुराई बद्नज़री से बचने की है अब ये क्या है ये नज़रें नीची रखना है। एक हदीस है अबू रैहाना रिवायत करते हैं कि वह एक जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। एक रात उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये फ़र्माते हुए सुना "आग (अज़ाब)

उस आँख पर हराम है जो अल्लाह तआला की राह में जागती रही, और आग उस आँख पर हराम है, जो अल्लाह तआला के डर की वजह से आँसू बहाती रही।" अबू शरीह कहते हैं कि मैंने एक रावी को यह कहते हुए सुना है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया था कि आग उस आँख पर हराम है जो अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को देखने की बजाए झुक जाती है। और उस आँख पर भी हराम है जो अल्लाह की राह में फोड़ दी गयी हो। (सुनन दारमी, किताबुल जिहाद)

फिर एक हदीस में ओबादा बिन सामत रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि तुम अपने बारे में मुझे छ: बातों की ज़मानत दे दो (अर्थात् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमा रहे हैं कि मैं तुम्हें जन्नत में जाने की खुशखबरी देता हूँ) फ़रमाया :- जब तुम बात करो तो सच बोलो, जब तुम वादा करो तो पूरा करो, जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाये तो माँगने पर दे दिया करो (टाल मटोल नहीं होनी चाहिए, अपने शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, ग़ज़्ज़े बसर से काम लो और अपने हाथों को ज़ुल्म से रोके रखो। (मसनद अहमद बिन जिल्द 5, पृष्ठ 323 प्रकाशन बेरूत) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया : रास्तों में मज्लिसें लगाने से बचो, उन्होंने कहा अल्लाह के रसूल ! हमें रास्तों में मज्लिस लगाने के सिवा कोई चारा नहीं। इन पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया- फिर रास्ते का हक़ अदा करो। उन्होंने कहा फिर इस का क्या हक़ है ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया – हर आने जाने वाले के सलाम का जवाब दो, नज़रें नीची रखो, रास्ता पूछने वाले को रास्ता बताओ, नेक बातों का हुक्म दो और बुरी बातों से रोको। (मसनद् अहमद बिन हम्बल, जिल्द 3 पृष्ठ 61, प्रकाशन बेरूत)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं कि :-

"क़ुर्आन शरीफ़ ने, जो कि इन्सान की स्वाभाविक इच्छाओं और कमज़ोरियों को मद्दे नज़र रखकर मौक़ा और महल के अनुसार शिक्षा देता है, क्या ही अच्छा तरीक़ा बयान फ़र्माया है :-

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ " (अल् नूर आयत नं. 31)

कि तू ईमान वालों से कह दे कि वह अपनी निगाहो को नीची रखें, और अपने सुराखों (अर्थात् शर्मगाहो) की हिफ़ाज़त करें। ये वह अमल है जिससे उनके दिल पवित्र होंगे। फुरूज से तात्पर्य सिर्फ शर्मगाह ही नहीं बल्कि हर एक सूराख़ जिसमें कान वग़ैरह भी शामिल हैं। और इनमें इस बात का विरोध किया गया है कि गैर मुहरम औरत (ऐसी औरत जिस से शादी करना जाइज़ हो) का राग आदि सुना जाय। फिर याद रखो कि हज़ारों तज़ुर्बों से यह बात साबित शुदा है कि जिन बातों से अल्लाह तआला रोकता है अन्तत: इन्सान को उनसे रुकना ही पड़ता है।" (मलफ़ूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 135)

फिर आप फ़रमाते हैं :

"इस्लाम ने पाबन्दी की शर्तें स्त्रियों और पुरुषों दोनों के लिए अनिवार्य ठहराई हैं। जिस तरह स्त्रियों को पर्दा करने का आदेश है। उसी तरह (पुरुषों) को भी नज़रे नीची रखने का स्पष्ट आदेश है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, हलाल और हराम का फ़र्क़, ख़ुदी तआला के हुक्मों के मुकाबले में अपनी आदतों और रीति-

रिवाज इत्यादि को छोड़ने की ऐसी पाबन्दियाँ हैं जिनसे इस्लाम का द्वार बहुत ही तंग है। यही कारण है कि हर एक व्यक्ति उस द्वार में दाख़िल नहीं हो सकता।" (मलफ़ूज़ात जिल्द 5, पृष्ठ 614 जदीद एडीशन)

इससे मर्दों को मालूम हो गया होगा कि उनकी भी नज़रें हमेशा नीची रहनी चाहियें। शर्म सिर्फ औरतों के लिए ही नहीं मर्दों के लिए भी है।

फिर आप फ़र्माते हैं: "ख़ुदा तआला ने ख़ुल्क-ए-अहसान अर्थात पवित्रता करने के लिए सिर्फ अच्छी शिक्षा ही नहीं फ़र्मायी बल्कि इन्सान को पाकदामन रहने के लिए पाँच इलाज भी बतला दिये हैं। अर्थात् ये कि अपनी आँखों को नामहरम औरतों पर नज़र डालने से बचाना, कानों को नामहरम की आवाज़ सुनने से बचाना। नामहरमों के क़िस्से न सुनना। और ऐसे तमाम् प्रोग्रामों में जाने से अपने आपको बचाना जिनमें जाने से इस बुरे काम के पैदा होने का डर हो, यदि निकाह न हो तो रोज़े रखना इत्यादि।"

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "इस स्थान पर हम बड़े दावे के साथ कहते हैं कि ये श्रेष्ठ शिक्षा उन सब उपायों के साथ जो क़ुर्आन शरीफ़ ने बयान फ़र्मायी है सिर्फ इस्लाम ही से विशिष्ट हैं। और इस जगह ये एक बात याद रखने के योग्य है और वह ये है कि चूँकि इन्सान की वह स्वाभाविक अवस्था जो कामवासना का स्त्रोत है। जिससे इन्सान बिना किसी पूर्ण परिवर्तन के अलग नहीं हो सकता यही है कि उसकी काम-वासना मौका और महल पाकर जोश मारने से रुक नहीं सकते। या यूँ कहो कि अत्याधिक खतरे में पड़ा जातें हैं इसीलिएँ ख़ुदा तआला ने हमें ये शिक्षा नहीं दी कि हम नामहरम औरतों और उनकी समस्त ख़ूबसूरतियों पर नज़र डाल लें और उनके तमाम अंदाज़ नाचना आदि देख लें परन्तु पवित्र दृष्टि से देखें। और न ये शिक्षा दी है कि हम बेगाना जवान औरतों का गाना बजाना सुन लें और उनके हुस्न के क़िस्से सुना करें परन्तु पवित्र विचार के साथ सुनें। बल्कि हमें ताकीद है कि हम नामहरम औरतों को और उनके सुन्दर जगहों को कदापि न देखें न पवित्र दृष्टि से और न अपवित्र दृष्टि से। और उनकी मीठी तानें और उनके हुस्न के क़िस्से न सुनें। न पवित्र विचार से न अपवित्र विचार से। बल्कि हमें चाहिए कि उनके सुनने और देखने से नफ़रत रखें जैसा कि मुर्दार से ताकि ठोकरें न खावें। क्योंकि आवश्यक है कि आज़ाद नज़रों से किसी समय ठोरें पेश आवें। अत: ख़ुदा तआला चाहता है कि हमारी आँखे, और दिल और विचार सब पाक रहें। इसलिए उसने यह सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रदान की। इसमें क्या शंका है कि अत्याधिक स्वतन्त्रता ठोकर का कारण बन जाती है।" (अर्थात् अगर रोक टोक न हो तो ठोकर का कारण बन जाती है "अगर हम एक भूखे कुत्ते के आगे नरम-नरम रोटियाँ रख दें और फिर हम उम्मीद रखें कि उस कुत्ते के दिल में उन रोटियों का ख़्याल भी मन आये त हम अपने इस ख़्याल में ग़ल्ती पर हैं। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि शरीर की गन्दी भावनात्मक ताकतों को गुप्त कारवाईयों का मौका भी न मिले। और ऐसा कोई अवसर ही न आये जिससे बुरे विचार हरकत कर सकें।" (इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 10, पृष्ठ 343, 344)

(शराइते बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ)

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل 12)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۔ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

सामान्य ज्ञान (गूगल के माध्यम से)

1.ठंड के दिन या फिर शीतकाल में हैंडपंप का पानी का गर्म होने का क्या कारण है ?

उत्तर-पृथ्वी का तापमान एटमॉस्फेयर के तापमान से अधिक होता है जिसके चलते ठंड के दिन में पानी गर्म होता है।

2.काले कपड़े के बजाए सफेद कपड़ा ठंडा क्यों होता है ?

उत्तर-काले कपड़े के बजाए सफेद कपड़ा इसलिए ठंडा होता है क्योंकि सफेद कपड़े में जो भी प्रकाश पहुंचता है उसे वह परिवर्तित कर देता है।

3.टेनिस गेंद बॉल के समतल की अपेक्षा ऊंची चोटियों पर अधिक उछलने का कारण क्या है ?

उत्तर- कम घनत्व होने के चलते ऊंची चोटियों पर समतल स्थान की अपेक्षा ज्यादा चलती है।

4.सोलर सिस्टम का अनुपात क्या है ?

उत्तर-99.86% है।

5.मायोपिया (निकट दृष्टि दोष) को किस और नाम से जाना जाता है?

उत्तर-समीप दृष्टि।

6.ऑप्टिकल फाइबर का आविष्कार किसने किया था ?

उत्तर-नरिंदर कपानी ।

7. वाहनों के दीपों में किस प्रकार के दर्पण का प्रयोग किया जाता है ?

उत्तर- परवलिया दर्पण।

8.लैंबर्ट नियम किस से जुड़ा हुआ है ?

उत्तर-प्रदीप्ति ।

9.पवन की गति को नापने वाले उपकरण का क्या नाम है?

उत्तर-एनीमोमीटर ।

10.रॉकेट की गति पर कौन सा संरक्षण सिद्धांत लागू होता है ?

उत्तर-संवेग का संरक्षण ।

11.बिजली का बल्ब किस से अर्जित होता है?

उत्तर-शक्ति और वोल्टता ।

12.वोल्टता बिजली के उच्च बोल्ट वाले तार पर बैठे पक्षी की करंट से मृत्यु क्यों नहीं होती है ?

उत्तर-क्योंकि वह विद्युत धारा के प्रवाह के लिए समृत पंथ नहीं बनता है।

13.सौर कोशिकाएं किसके सिद्धांत के ऊपर काम करती है ?

उत्तर-प्रकाश विद्युत।

☆ ☆ ☆